सप्तमः पाठः
गीताऽमृतम्

(1) वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ।। 1।।

(2) नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ।। 2।।

(3) जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं–जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ।। 3।।

(4) कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।। 4।।

(5) यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।। 5।।

(6) परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ।। 6।।

(7) श्रध्दावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ।। 7।।

(8) यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ।। 8।।

(9) यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ।। 9।।

हिन्दी अर्थ

(1) जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नये वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नये शरीरों को प्राप्त होता है।

(2) इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इसको आग नहीं जला सकती, इसको जल नहीं गला सकता और वायु नहीं सूखा सकती।

(3) क्योंकि इस मान्यता के अनुसार जन्मे हुए की मृत्यु निश्चित है और मरे हुए का जन्म निश्चित है। इससे भी इस बिना उपाय वाले विषयों में तू शोक करने के योग्य नहीं है।

(4) तेरा कर्म करने में ही अधिकार है उसके फलों में कभी नहीं। इसलिये तू कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।

(5) हे भारत! जब–जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब–तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् साकार रूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ।

(6) साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए, पाप कर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए मैं युग–युग में प्रकट हुआ करता हूँ।

(7) जितेन्द्रिय, साधन परायण और श्रद्धावान मनुष्य ज्ञान को प्राप्त होता है तथा ज्ञान को प्राप्त होकर वह बिना विलम्ब के तत्काल ही भगवत्प्राप्ति रूप परम शान्ति को प्राप्त हो जाता है।

(8) जो पुरुष सम्पूर्ण भूतों में सबके आत्मरूप मुझ वासुदेव को ही व्यापक देखता है और सम्पूर्ण भूतों को मुझ वासुदेव के अन्तर्गत देखता है, उसके लिए मैं अदृश्य नहीं होता और वह मेरे लिए अदृश्य नहीं होता।

(9) हे राजन्! जहाँ योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण है और जहाँ गाण्डीव धनुर्धारी अर्जुन है, वहीं पर श्री, विजय,विभूति और अचल नीति है – ऐसा मेरा मत है।

शब्दार्थाः

वासांसि = वस्त्र, कपड़े। जीर्णानि = पुराने, सड़े–गले। क्लेदयन्ति = गीला करते हैं। जातस्य = उत्पन्न हुए की। ध्रुवः = निश्चित। शोचितुम् = सोचने के लिए। अर्हसि = योग्य हो। अपरिहार्य = अटल। ग्लानिः = हानि। सृजाम्यहम् = (सृजामि+अहम्) मैं जन्म लेता हूँ। पार्थ = अर्जुन।

अभ्यासप्रश्नाः

प्रश्न 1. संस्कृत में उत्तर लिखिए –

(क) कीदृशं शरीरं विहाय देही नवशरीरं धारयति ?
(ख) शस्त्राणि कं न छिन्दन्ति ?
(ग) पावकः कं न दहति ?
(घ) ईश्वरः किमर्थं संभवति ?
(ङ.) ज्ञानं कः लभते ?

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(क) नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि ....।
(ख) ...., ध्रुवं जन्म मृतस्य।
(ग) यदा–यदा हि धर्मस्य च, ...।
(घ) ...., संभवामि युगे–युगे।
(ङ.) श्रद्धावान् लभते ज्ञानं, ...।

प्रश्न 3. गीताऽमृतम् पाठ के चौथे एवं पाँचवें श्लोक को कण्ठस्थ कीजिए।

प्रश्न 4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

(क) आत्मा मरती नहीं है।
(ख) आत्मा को अग्नि जला नहीं सकती।
(ग) तुम्हारा कर्म में ही अधिकार है।
(घ) फल की इच्छा मत करो।
(ङ.) यह योगेश्वर कृष्ण है।

प्रश्न 5. संधि विग्रह कीजिए –

PUXH7D

(क) कर्मण्येवाधिकारस्ते – ....
(ख) ग्लानिर्भवति – ....
(ग) सृजाम्यहम् – ....
(घ) श्रीर्विजयो – ....
(ङ.) नीतिर्मतिर्मम – ....